

01 सभी का मनोरथ कैसे पूर्ण होता है ?		१० अ०३	वल्लर मनोरथ कौनसे गलु हैं वास्तु हैं?
भगवान दयानिधि है।	भगवान की दया से सभी का मनोरथ पूर्ण होता है।	देवर करुणामयी।	देवर करुणामयी।
प्रभु की दया को चाँद के किरणों और सागर की तरंग मालाएँ दर्शा रहे हैं।	प्रभु की दया को चाँद के किरणों और सागर की तरंग मालाएँ दर्शा रहे हैं।	देवर दयेयन् चंद्रन करणगलु मत्तु।	देवर दयेयन् चंद्रन करणगलु मत्तु।
03 प्रसाद जी की प्रमुख रचनाएँ कौन-कौन सी हैं ?		बुद्धादर बुधुभ रजनेगलु यापुवु ?	
प्रसाद जी की प्रमुख रचनाएँ हैं -	प्रसाद जी की प्रमुख रचनाएँ हैं -	बुद्धादर बुधुभ रजनेगलु -	बुद्धादर बुधुभ रजनेगलु -
1. कानन कुसुम 2. झरना 3. आँसू 4. लहर 5. आँधी 6. कामायनी 7. आकाशदीप 8. चंद्रगुप्त 9. धृवस्वामिनी 10. कंकाल 11. तितली 12. इरावती. आदि	1. कानन कुसुम 2. झरना 3. आँसू 4. लहर 5. आँधी 6. कामायनी 7. आकाशदीप 8. चंद्रगुप्त 9. धृवस्वामिनी 10. कंकाल 11. तितली 12. इरावती. आदि	1. कानन हावु 2. रुरु 3. कस्तीरु 4. आलै 5. सुंपरगाल 6. बयके 7. आकाशदीप 8. चंद्रगुप्त 9. धृवस्वामिनी 10. अश्विप्रंजर 11. चिट्ठी 12. इरावती मुंताद्व	1. कानन हावु 2. रुरु 3. कस्तीरु 4. आलै 5. सुंपरगाल 6. बयके 7. आकाशदीप 8. चंद्रगुप्त 9. धृवस्वामिनी 10. अश्विप्रंजर 11. चिट्ठी 12. इरावती मुंताद्व
04 प्रभों, कविता में भगवान की लीला कैसे प्रकाशित है?		बुद्धोऽ कवितेयलू देवर लैलै हैं बुद्धातिवागिदे?	
इस कविता में भगवान की विराट स्वरूप का वर्णन कियागया है।	निर्मल चाँद की किरणों भगवान की दया को दर्शा रहे हैं।	अ कवितेयलू देवर विताल रुपद वनासैयदे	निर्मल चंद्रन बैजक देवर दयेयन्सू तैरिसुत्तिदे।
प्रभु की लीला आदि और अनंत है।	प्रभु की दया सागर जैसा है। भगवान दयानिधि है।	देवर देवर विताल रुपद वनासैयदे।	देवर करुणै सागरदंते ऐदे। देवर करुणैया निरंतरवागिदे।
प्रभु की दया से सभी का मनोरथ पूर्ण होते हैं।	प्रभु की दया से सभी का मनोरथ पूर्ण होते हैं।	देवर करुणै विताल रुपद वनासैयदे।	देवर करुणैयांद वल्लर बयके वास्तुवागिदे।
05 रवींद्रनाथ जी ने 'सर' की उपाधि क्यों त्याग दी?		रवींद्रनाथरु 'सर' बदवियन्सू एकै त्रजिसिदरु?	
1913 में 'सर', की उपाधि अंग्रेजों द्वारा दिया गया था।	1919 में जलियाँवालाबाग का अमानुषिक हत्याकांड हुआ।	1913रलै 'सर' बदवियन्सू अंगूरु निरिद्धरु।	1919रलै जलियांवालाबाग अंगूरु निरिद्धरु।
अंग्रेजों के इस अमानुषिकता के कारण 'सर' की उपाधि त्याग दी।		अंगूरु अ कृष्णसैयद बदवियन्सू त्रजिसिदरु।	
06 रवींद्रनाथ जी के (आरंभिक) शिक्षा के बारे में बताइए।		रवींद्रनाथर शिक्षाद कुरितु तिळी.	
आरंभिक शिक्षा कॉन्वेंट स्कूल में हुआ।	बाद में घर पर ही शिक्षा प्राप्त की।	अरंभिक शिक्षा कॉन्वेंट शालैयलू अयितु।	निरंतर मनेयलू यैं शिक्षा प्रदेदरु।
सत्रह वर्ष की आयु में यूनिवर्सिटि ऑफ लन्डन में प्रविष्ट हुए।		17नै यैस्सिनलू ल०८नै वि.वि. यलू दाविलाति प्रदेदरु।	
07 शांतिनिकेतन का आशय क्या था ?		शांतिनिकेतन लाद्दैशे विनागितु?	
औपचारिक शिक्षा देना। इसके साथ		जेप्हेकारि शिक्षा निरिद्धरु।	
युवक-युवतियों की प्रतिभा तथा कौशल की अभिव्यक्ति के लिए व्यवस्था करना।	लोगों की प्रतिभा उनकी आजीविका का साधन बनाना।	युवक युवतियर प्रतिभै मत्तु कुकलतेयन्सू वृक्तप्रदिसलु अवकाश वादकैदैवदूदमु।	जनर प्रतिभै अवर जैवनद साधनवन्नागी वादमवदमु।
08 रवींद्रनाथ जी के प्रमुख रचनाएँ कौन-कौन सी हैं?		रवींद्रनुर बुधुभ रजनेगलावुवु ?	
काव्य : 1. गीतांजलि 2. नैवेद्य	कहानी संग्रह : 1. काबुलीवाला 2. सुभा 3. क्षुदित पाषाण	काव्य : 1. गीतांजलि 2. नैवेद्य	कहानी संग्रह : 1. काबुलीवाला 2. अमृत 3. वसिद विष
नाटक : 1. चित्रांगदा 2. डाकघार 3. राजा	उपन्यास : 1. घर और बाहर 2. गोरा 3. आँख की किरकिरी	नाटक : 1. चित्रांगदा 2. अमृत 3. राजा	उपन्यास : 1. घर और बाहर 2. गोरा 3. किरकिरी
09 रवींद्रनाथ जी किन-किन विषयों पर लेख लिखे हैं।		रवींद्रनुर याव्याव विषयद लैविन बरेदिद्धरै?	
रवींद्रनाथ जी ने राजनीति, शिक्षा, धर्म, कला - आदि विषयों पर लेख लिखे हैं।		रवींद्रनुर राजनीति, शिक्षा, धर्म मत्तु कलै यैविन बरेदिद्धरै।	
10 रवींद्रनाथ जी को कौन-कौन सी उपाधियाँ मिली ?		रवींद्रनुरिंग याव्याव प्रैश्सी दौरकैवे?	
रवींद्रनाथ जी महान साहित्यकार और समाज सेवक थे। इन्हें सन् 1913 में गीतांजली काव्य को नोबेल पुरस्कार।	सन् 1913 में गीतांजली काव्य को नोबेल पुरस्कार।	रवींद्रनुर महान् शाहिकर राजा यैविन वाजसीवर	रवींद्रनुर महान् शाहिकर राजा यैविन वाजसीवर
सन् 1913 में अंग्रेजों द्वारा सर की उपाधि।	सन् 1914 कोलकाता विश्वविद्यालय से मानद डी.लिट. उपाधि प्राप्त हुए।	कृष्ण 1913 रलै अंगूरिंद 'सर' प्रदेव	कृष्ण 1914 रलै गोरव दै.लिट. प्रदेविगलु सिक्कैवे।
11 शिक्षा क्षेत्र को रवींद्रनाथ जी की देन क्या है ?		शिक्षा क्षेत्र को रवींद्रनुर कैदौरी एवं ?	
सन् 1921 में बोलपुर के स्कूल को शांतिनिकेतन नाम से स्थापित किया।	शांतिनिकेतन अब विश्वभारती नाम से प्रसिद्ध है।	1921रलै भौलैवर शालैयन्सू शांतिनिकेतन वैसरिनैद साफ्सिदरु	
विश्वभारती एक आदर्श महा विद्यालय है।	युवक-युवतियों की प्रतिभा तथा कौशल की प्रकाशन के लिए इस का स्थापना किया गया।	शांतिनिकेतन अव विश्वभारती वैसरिनैद प्रैश्सीवागिदे।	शांतिनिकेतन अव विश्वभारती वैसरिनैद प्रैश्सीवागिदे।
			युवक युवतियर प्रतिभै मत्तु कुकलतेयन्सू वृक्तप्रदिसलु अवकाश वादकैदैवदूदमु।

१० शांति

25	इंटरनेट की सहायता से बेरोजगारी की समस्या कैसे मिटा सकते हैं ?	अंतर्राष्ट्रीय नियमों ने ऐसी सेवाएँ नियमित की हैं जो इंटरनेट की सहायता से असंख्यात लोगों को उद्योग मिला है। इंटरनेट की सहायता से लोग उद्योग खोज सकते हैं। इंटरनेट से देशों की आर्थिक स्थिति में सुधार आता है।	अंतर्राष्ट्रीय नियमों ने ऐसी सेवाएँ नियमित की हैं जो इंटरनेट की सहायता से असंख्यात लोगों को उद्योग मिला है। अंतर्राष्ट्रीय नियमों ने ऐसी सेवाएँ नियमित की हैं जो इंटरनेट की सहायता से लोग उद्योग खोज सकते हैं। अंतर्राष्ट्रीय नियमों ने ऐसी सेवाएँ नियमित की हैं जो इंटरनेट से देशों की आर्थिक स्थिति में सुधार आता है।
26	भारत माँ के प्रकृति सौंदर्य का वर्णन कीजिए।	भारत माँ के प्रकृति सौंदर्य का वर्णन कीजिए।	भारत माँ के प्रकृति सौंदर्य का वर्णन कीजिए।
	भारत माँ अमरों की जननी है।	भारत माँ अमरों की जननी है।	भारत माँ अमरों की जननी है।
	भारत माँ के खेत हरे भरे और सुंदर हैं।	भारत माँ के खेत हरे भरे और सुंदर हैं।	भारत माँ के खेत हरे भरे और सुंदर हैं।
	वन-उप वन फल-फूलों से भरा हुआ है।	वन-उप वन फल-फूलों से भरा हुआ है।	वन-उप वन फल-फूलों से भरा हुआ है।
	भारत भूमि खनिज संपत्ति से भरा हुआ है।	भारत भूमि खनिज संपत्ति से भरा हुआ है।	भारत भूमि खनिज संपत्ति से भरा हुआ है।
	सुख-संपत्ति और धन-धाम को मुक्त हस्त से बाँट रही है।	सुख-संपत्ति और धन-धाम को मुक्त हस्त से बाँट रही है।	सुख-संपत्ति और धन-धाम को मुक्त हस्त से बाँट रही है।
27	मातृ भूमि का स्वरूप कैसे सुशोभित है ?	मातृ भूमि का स्वरूप कैसे सुशोभित है ?	मातृ भूमि का स्वरूप कैसे सुशोभित है ?
	मातृ भू हरे-भरे खेत, फल-फूल और वन-उप वनों से सुंदर है।	मातृ भू हरे-भरे खेत, फल-फूल और वन-उप वनों से सुंदर है।	मातृ भू हरे-भरे खेत, फल-फूल और वन-उप वनों से सुंदर है।
	माँ के एक हाथ में न्याय पताका है।	माँ के एक हाथ में न्याय पताका है।	माँ के एक हाथ में न्याय पताका है।
	दूसरे हाथ में ज्ञान का दीप है।	दूसरे हाथ में ज्ञान का दीप है।	दूसरे हाथ में ज्ञान का दीप है।
	मातृ भू में खनिजों का संपदा भरा हुआ है।	मातृ भू में खनिजों का संपदा भरा हुआ है।	मातृ भू में खनिजों का संपदा भरा हुआ है।
	मातृ भू के गोद में अनेक अमर लोगों ने सोये हुए हैं।	मातृ भू के गोद में अनेक अमर लोगों ने सोये हुए हैं।	मातृ भू के गोद में अनेक अमर लोगों ने सोये हुए हैं।
	माँ के साथ करोड़ों देश-भक्त हैं।	माँ के साथ करोड़ों देश-भक्त हैं।	माँ के साथ करोड़ों देश-भक्त हैं।
	सब सहयोग से रहना चाहती है।	सब सहयोग से रहना चाहती है।	सब सहयोग से रहना चाहती है।
	भारत माँ सारे संसार को एकता में बदल दे।	भारत माँ सारे संसार को एकता में बदल दे।	भारत माँ सारे संसार को एकता में बदल दे।
	जै-हिंद की नाद नगर और ग्रामों में गूँजे।	जै-हिंद की नाद नगर और ग्रामों में गूँजे।	जै-हिंद की नाद नगर और ग्रामों में गूँजे।
28	लेखिका के ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू क्या करता था?	लेखिका के ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू -	लेखिका के ध्यान आकर्षित करने के लिए गिल्लू -
	लेखिका के पैर के पास आकर सर्व से परदे पर चढ़ जाता था।	लेखिका के पैर के पास आकर सर्व से परदे पर चढ़ जाता था।	लेखिका के पैर के पास आकर सर्व से परदे पर चढ़ जाता था।
	फिर उसी वेग से उतरता था।	फिर उसी वेग से उतरता था।	फिर उसी वेग से उतरता था।
	लेखिका उसे पकड़ने तक दौड़ता रहता था।	लेखिका उसे पकड़ने तक दौड़ता रहता था।	लेखिका उसे पकड़ने तक दौड़ता रहता था।
29	महादेवी वर्मा को चौंकाने के लिए गिल्लू कहाँ-कहाँ छिप जाता था ?	महादेवी वर्मा को चौंकाने के लिए गिल्लू -	महादेवी वर्मा को चौंकाने के लिए गिल्लू -
	फूल दाने के फूलों में छिप जाता था।	फूल दाने के फूलों में छिप जाता था।	फूल दाने के फूलों में छिप जाता था।
	कभी परदे के चुन्नट में छिपता था।	कभी परदे के चुन्नट में छिपता था।	कभी परदे के चुन्नट में छिपता था।
	कभी सोनजूही की पत्तियों में छिपता था।	कभी सोनजूही की पत्तियों में छिपता था।	कभी सोनजूही की पत्तियों में छिपता था।
30	लेखिका को गिलहरी किस स्थिति में दिखाई पड़ी ?	गिलहरी दीवार और गमले के बीच में गिरा हुआ दिखाई पड़ा।	गिलहरी दीवार और गमले के बीच में गिरा हुआ दिखाई पड़ा।
	घोंसले से गिरा पड़ा बच्चा था।	घोंसले से गिरा पड़ा बच्चा था।	घोंसले से गिरा पड़ा बच्चा था।
	वह निश्चेष्ट-सा गमले से चिपका हुआ था।	वह निश्चेष्ट-सा गमले से चिपका हुआ था।	वह निश्चेष्ट-सा गमले से चिपका हुआ था।
	कौए की चोंच की चोट से उस का देह घायल था।	कौए की चोंच की चोट से उस का देह घायल था।	कौए की चोंच की चोट से उस का देह घायल था।
31	लेखिका ने गिल्लू के प्राण कैसे बचाए ?	लेखिका गिल्लू के प्राण बचाई कि -	लेखिका गिल्लू के प्राण बचाई कि -
	घायल गिल्लू को धीरे से उठा कर कमरे में लाई।	घायल गिल्लू को धीरे से उठा कर कमरे में लाई।	घायल गिल्लू को धीरे से उठा कर कमरे में लाई।
	रुई से घाव का रक्त पांछी।	रुई से घाव का रक्त पांछी।	रुई से घाव का रक्त पांछी।
	घाव पर पेनसिलिन का महरम लगाई।	घाव पर पेनसिलिन का महरम लगाई।	घाव पर पेनसिलिन का महरम लगाई।
	घंटों तक उस का उपचार की।	घंटों तक उस का उपचार की।	घंटों तक उस का उपचार की।
	उसके मुंह में एक बूँद पानी टपकाया गया।	उसके मुंह में एक बूँद पानी टपकाया गया।	उसके मुंह में एक बूँद पानी टपकाया गया।

32	गिल्लू ने लेखिका के गैरहाजरी में दिन कैसे बिताया ?	१० शाहौद	गिल्लू लैशिकंय अनुभवीतिय दिन हैंगे कलैयुक्त?
	जब लेखिका का एक्सिसडेंट हुआ तब गिल्लू - कोई कमरे की दरवाजा निकालता तो वह भागकर आता, पर अनजान आदमी को देखकर वापस घोंसले में चला जाता । दूसरे लोग उसे काजू डालते तो उसे नहीं खाता था । शायद महादेवी वर्मा के बिना वह दुःखी रहता था ।		लैशिकंय अपशात्वादाग गिल्लू - यारादरु भागिलु तैरेदरे छिं बरुत्ति त्तु, अदरे अपरिचित वृक्षगङ्गन्नू नैरोद मरद गुणिं फैरोगुत्ति त्तु जैरेयवरु अदक्षे गैरोदंबि वाकदरे अदन्नू तिन्नूत्तिद्विल्ल. सामान्यवागि महादेवियवरल्लदे अद मःवियागिरुत्ति त्तु.
33	लेखिका ने गिलहरी को क्या-क्या सिखाया ?		लैशिकंयवरु अलिंगे फैरोनु कलैशिदरु?
	महादेवी वर्मा ने गिलहरी को सिखाया कि - लेखिका खाते समय गिल्लू थाली में बैठना चाहता था । तब लेखिका उसे थाली के पास बैठना सिखाया । सफाई से एक-एक दाने उठा कर खाने को सिखाया । जब लेखिका लिखने बैठती तब लिफाफे में चुप-चाप रहना सिखाया ।		लैशिकंयवरु अलिंगे कलैशिदरु एसेंदरे - लैशिक लाटक्के कौताग अलिलु तैक्षीयल्लू कौदलु बंयसुत्ति त्तु अग लैशिक अदक्षे तैक्षीय यत्तिर कौदुपुदन्नू कलैशिदरु. सूख्ज्जवागि ओंदेहोंदे अगुञ्नू एत्तु तिन्नूलु कलैशिदरु. लैशिक बरेयलु कौताग लैक्षेटैयल्लू सुमुनै इरलु कलैशिदरु
34	गिल्लू के अंतिम दिनों का वर्णन कीजिए ।		गिल्लूविन अंतिम दिनद वृष्णहैयन्नू मारिं.
	गिलहरी की आयु केवल दो वर्ष होती है । गिल्लू ने अपनी अंतिम दिन में दिन भर कुछ न खाया । न बाहर गया । पंजे ठंडे हो रहे थे । हीटर से उष्ण देने का प्रयत्न हुआ, पर कोई फायदा न हुआ । सुबह तक वह चल बसा था ।		अलिंग अयुम्हू कैवल एरदु वृष्णगलागिरुत्तुदे. गिल्लू तन्नू अंतिम दिनदल्लू यगलैल्लू एनसू तिन्नूल्लू. मौरगो फैरोगल्लू. कालगलु तज्जुगानुत्तिद्वप्तु. एक्टरो निंद बिसि मादुप वृयत्तवायुतु अदरे यापुदे उपयोगवागल्लू. चैर्गे यवरंगे फैरोगद्व.
35	गिल्लू के कार्यकलाप के बारे में लिखिए ।		गिल्लूविन कायंदकलापद बग्गे बरेयरि.
	गिल्लू का कार्य कलाप इस तरह था कि - गिल्लू अपने झूले में झूला करता था । लेखिका को आकर्षित करने के लिए तेजी से उतरता और उसी तेजी से चढ़ता था । भूख लगने पर चिक-चिक करके सूचना देता था । गिल्लू का प्रिय खाद्य काजू था । बाहर जाकर गिलहरियों के झुंड का नायक बनता । हर डाल पर उछलता-खूदता रहता । ठीक चार बजे वापस आता था । लेखिका को चौंकाने के लिए फूल के बीच में, परदे के पीछे, पत्तियों के पीछे छिप जाता था । खाते समय थाली के बाहर बैठ कर बड़ी सफाई से खाता था । गरमी के समय सुग्राही पर लेटा रहता था ।		गिल्लूविन दिनचरि रैगित्तु फैरोगदरे - गिल्लू तन्नू गोदल्लू नैतादुत्तिरुत्तु. लैशिकियन्नू अक्षेष्टसलु वैरोगागि इलु अदै वैगदल्लू फैलक्कैत्तु. वैश्वादाग चिक्को-चिक्को एंदु. सूजन्नै कैलुत्तित्तु. गिल्लूविन इज्जुवाद अमार गैरोदंबियागित्तु. मौरगदे फैरोगि अलिलगलु गुंजन नायकनागुत्तित्तु. पूतियोंदम कैलोंगेलु फैलै कैन्दादुत्तित्तु. सरियगि नाल्लु गंडिंगे मूरद बरुत्तित्तु. लैशिकियन्नू वैदिसलु होगल मूँद्दे, वैरदेयू फौंदे, एलेगल फौंदे बच्चियूकैल्लूत्तु. गिल्लूविन एवंदु. सैवयदल्लू तैक्षीयू मौरगे कुलुत्तु. फैरोगदरुत्तु. बैशिगेयल्लू नैरोन गैरोगैयू फैरोगुत्तु.
36	गिल्लू के प्रति महादेवी वर्मा जी की ममता का वर्णन कीजिए		गिल्लूविन फैरोगैयवरु मुमतै वृष्णक्ष.
	महादेवी वर्मा जी को पशु-पक्षियों से अत्यंत प्रेम था । वे एक गिलहरी को कौए के आहार बनने से बचाई थी । उस के घाव पोंछ कर मरहम लगाती है । उसे प्यार से गिल्लू नाम से पुकारती थी । घर के अन्य प्राणियों से ज्यादा प्यारा बन गया था । प्यार से लिफाफे में बंद कर रखती थी । खिडकी की कीलें खोल कर उसे स्वतंत्र कर दी थी । हर दिन उसे प्रिय खाद्य कन्जू देती थी । उसके लिए बिस्कुट भी देती थी । थाली के पास बैठ कर खाने को सिखाई थी । अंतिम दिन में उस के पंजे को हीटर से उष्ण देने का प्रयास करती है । गिल्लू के मरण के बाद सोनजूही लता के नीचे समाधी बनाती है । इस तरह गिल्लू के प्रति महादेवी वर्मा जी को अपार ममता थी ।		महादेवियपरिं प्राणी-पक्षीगल फैरोगै तुंब फैरोगै इत्तु. अवरु ओंदु अलिन्नू कागेंगे अमारवागुदरिंद उलिंदरु. अदर गायपनु बरेयू मुलामु वृक्षत्तुरै. अदन्नू त्रैतियोंद गिल्लू वैरोनिंद करेयुत्तिद्वरु. मूनेयू इतर प्राणीगलिंगत वैच्चु त्रैतियागित्तु. त्रैतियोंद लैक्षेटैयल्लू जिसुत्तिद्वरु. कैशिकियू जालरियन्नू तैरेदु अदन्नू स्फृत्तुवन्नागिस्द्वरु. पूति दिन अदक्षे इज्जुवाद अमार गैरोदंबियन्नू कौदुत्तिद्वरु. अदक्षे बिस्कुत्तनु सूप कौदुत्तिद्वरु. तैक्षीयू वृत्तिरु कौतु तिन्नूपुदन्नू कलैशिदरु. अंतिम दिनदल्लू अदक्षे तावि कैलियू बदुकिसलु पूयत्तिसुत्तुरै. गिल्लू सत्तुग वैरु जाज गिरद कैर्गे सूपाद वैरुत्तु. जिसरंते गिल्लूविन फैरोगैयवरिंगै मुमतै इत्तु. छरदियुंद फैरोनु मुद बहुदु?
37	छलनी से क्या-क्या कर सकते हैं ?		जरदियुंद फैरोनु मुद बहुदु?
	छलनी से चाय छान सकते हैं । छलनी से दूध छान सकते हैं । और अनेक काम कर सकते हैं ।		जरदियुंद जर्द नैरोस बहुदु. जरदियुंद यालु नैरोस बहुदु. जरदियुंद एलसंगल्लू वैरुत्तु.

38	बसंत राज किशोर से क्या विनती करता है ?	३० शांति	बसंत राजकीर्णनल्लि एनेंदु चैंडिकौळुत्तुने?
	बसंत ने राजकिशोर से विनती करता है कि		बसंतनु राजकीर्णनल्लि चैंडिकौळुत्तुने एनेंदरै-
	छलनी, बटन या दियासलाई में से कोई एक सामान खरीद लें।		जरदि, गुंडि, चैंडि कैंडिगळल्लि या प्रवादरैंदु एरिंदिकलि.
	क्यों कि सुबह से उसके कोई सामान नहीं बिके हैं।		एकैंदरै चैंडग़ेयिंद अपन या प्रदै वस्तु माराट्वागिल्लि
	वह परिश्रम से पैसे कमाना चाहता है।		अपनु श्रृंगदिंदलै घणवन्नु संप्रादिसलु बंयसुत्तुने.
39	बसंत राज किशोर से दो पैसे लेने से क्यों इनकार करता है ?	बसंतनु राजकीर्णनिंद हण प्रदेयलु एक तिरसूरिसुत्तुने?	
	बसंत राज किशोर से दो पैसे लेने से इनकार करता है कि		बसंतनु राजकीर्णनिंद २ प्रैसै प्रदेयलु तिरसूरिसुत्तुने
	वह भीख नहीं लेना चाहता है।		अपनु भैंसै प्रदेयलु बंयसुवृद्धिल्लि.
	वह परिश्रम से पैसे कमाना चाहता है।		अपनु श्रृंगदिंदलै घणवन्नु संप्रादिसलु बंयसुत्तुने.
	सामानों को बेच कर पैसे कमाना चाहता है।		वस्तुगळन्नु माराट्वा प्रादि घण गळसलु बंयसुत्तुने.
40	बसंत राजकिशोर के पास क्यों नहीं लौटा ?	बसंतनु राजकीर्णन हत्तिरै एक मरजलिल्लि?	
	राजकिशोर से नोट लेकर भुनाने गया था।		राजकीर्णनिंद नैंडु प्रदेदै चिल्लरै मादिसलु हैंगिद्दनु.
	तब बसंत मोटर के नीचे आगया था।		आग बसंतनु वैंडरू वा प्रानद कैंगे बिड्दिद्दनु.
	उसके दोनों पैर कुचले गए थे।		अपन एरदू कालगळु हिसुके गायवागिद्दवृ.
	वह बेहोश हो गया था।		अपनु प्रैज्जै तेप्पिद्दनु.
	इसी कारण बसंत राजकिशोर के पास नहीं लौटा।		जैंदै कारणकै बसंतनु राजकीर्णन हत्तिरै मरजलिल्लि.
41	प्रताप राजकिशिर के घर क्यों आया ?	प्रूत्तापनु राजकीर्णन मनेंगे एक बंदनु?	
	प्रताप को बसंत ने ही भेजा था। क्यों कि		प्रूत्तापन्नु बसंतने कैंसिद्दनु. एकैंदरै
	बसंत राजकिशोर को एक छलनी बेची थी।		बसंतनु राजकीर्णनिंद नैंडु प्रदेदै चिल्लरै मारिद्दनु.
	राजकिशोर से नोट लेकर भुनाने गया था।		राजकीर्णनिंद नैंडु प्रदेदै चिल्लरै मादिसलु हैंगिद्दनु.
	तब बसंत मोटर के नीचे आगया था।		आग बसंतनु वैंडरू वा प्रानद कैंगे बिड्दिद्दनु.
	उसके दोनों पैर कुचले गए थे।		अपन एरदू कालगळु हिसुके गायवागिद्दवृ.
	वह बेहोश हो गया था।		अपनु प्रैज्जै तेप्पिद्दनु.
	इसी कारण प्रताप राजकिशोर के घर आया था।		जैंदै कारणकै प्रूत्तापनु राजकीर्णन मनेंगे बंदिद्दनु.
42	बसंत ने राजकिशोर को छलनी खरीदने के लिए किस तरह प्रेरित किया ?	बसंतनु राजकीर्णनन्नु जरदि एरिंदिसलु हैंगे प्रैंडैसिद्दनु?	
	छलनी खरीदने के लिए प्रेरित किया कि –		जरदि एरिंदिसलु प्रैंडैसिद्दनु हैंगैंदरै-
	चाय या दूध छानने के लिए खरीदे।		जैव अङ्गवा हालु सैंडेसलु एरिंदिसलि.
	पंडित मना करते हैं।		पैंडितरू तिरसूरिसुत्तुरै.
	तब विनम्र भाव से दो आने में खरीदने कहता है।		आग विनम्रयिंद एरदू आसैंगे एरिंदिसलु हैंगैंत्तुने.
	बाद में केवल छ: पैसों में।		नैंडरै कैंवल अरू प्रैसैंगे.
	अंत में कहता है कि सुबह से कुछ नहीं बिका है।		कैंसेंगे चैंडग़ेयिंद एन्हा वायपारवागिल्लि वैंदु हैंगैंत्तुने
	बसंत को पंडित का ही आशा थी।		बसंतने पैंडितरू राजकीर्णनद्दै भरवसै जैंत्तु.
43	बसंत ईमानदार लड़का है। कैसे ?	बसंतनु प्रूमाणिकै घुडुग. हैंगे?	
	बसंत एक ईमानदार लड़का है कि-		बसंत छैंपू प्रूमाणिकै घुडुग. हैंगैंदरै
	वह परिश्रम कर के पैसा कमाना चाहता है।		अपनु श्रृंगदिंदलै घणवन्नु संप्रादिसलु बंयसुत्तुने.
	सामानों को बेच कर पैसे कमाना चाहता है।		वस्तुगळन्नु माराट्वा प्रादि घण गळसलु बंयसुत्तुने.
	वह गरीब है फिर भी भीख नहीं लेना चाहता है।		अपनु बदज आदरू भैंसै प्रदेयलु बंयसुवृद्धिल्लि.
	बसंत राजकिशोर को एक छलनी बेची थी।		बसंतनु राजकीर्णनिंद नैंडु प्रदेदै चिल्लरै मारिद्दनु.
	राजकिशोर से नोट लेकर भुनाने गया था।		राजकीर्णनिंद नैंडु प्रदेदै चिल्लरै मादिसलु हैंगिद्दनु.
	तब बसंत मोटर के नीचे आगया था।		आग बसंतनु वैंडरू वा प्रानद कैंगे बिड्दिद्दनु.
	उसके दोनों पैर कुचले गए थे।		अपन एरदू कालगळु हिसुके गायवागिद्दवृ.
	वह बेहोश हो गया था।		अपनु प्रैज्जै तेप्पिद्दनु.
	फिर भी वह राज किशोर के पैसे वापस लौटाने प्रताप को भेजता है।		आदरू सज राजकीर्णन घण मरजलिल्लि प्रूत्तापन्नु हैंगैंत्तुने.
44	बसंत और प्रताप अहीर के घर में क्यों रहते थे ?	बसंत प्रूत्ताप गौल्लन मनेंयल्लि एकैंत्तुरै?	
	बसंत और प्रताप दोनों भाई थे।		बसंत पुत्तु प्रूत्ताप गौल्लरू एज्जुरू सहैंदररू.
	वे गरीब थे। वे दोनों अनाथ थे।		अपरु बदपरागिद्दरू. अपरिज्जुरु अनाधरागिद्दरू.
	दंगे के दिन उनके माता पिता मारे गए थे।		दंगेंयु समयदली अपर तायि तंदैयरन्नु सायिसलागित्रु.
	इसी लिए वे भीखू अहीर के घर में रहते थे।		जैंदै कृष्णियैंगे अपरु गौल्ल भैंकूकन मनेंयल्लिद्दरू.

45	राजकिशोर के मानवीय व्यवहार का परिचय दीजिए।	७० श०३	राजकीयोंने मानवीय व्यवहारवन्नु त्रिलोचन किया।
	पंडित राजकिशोर मजदूरों के नेता थे।		पंडित राजकीयोंने कला का मानवीय व्यवहारवन्नु त्रिलोचन किया।
	उन्हें छलनी की कोई आवश्यकता नहीं थी।		उन्होंने जरदार अवश्यकता नहीं बताई।
	फिर भी बसंत की परिश्रम को देख कर खरीदते हैं।		उन्होंने बसंत की परिश्रम को देख कर खरीदते हैं।
	बसंत मोटर दुर्घटना में घायल बने थे।		बसंत मोटर दुर्घटना में घायल बने थे।
	तब वे भीखू अहीर के घर जाकर बसंत की कुशलता पूछते हैं।		तब वे भीखू अहीर के घर जाकर बसंत की कुशलता पूछते हैं।
	बसंत की इलाज के लिए डॉक्टर को बुलाते हैं।		बसंत की इलाज के लिए डॉक्टर को बुलाते हैं।
	जब बसंत दर्द से तड़पता है तब उसे धैर्य देते हैं।		जब बसंत दर्द से तड़पता है तब उसे धैर्य देते हैं।
	एम्बुलेन्स को बुलाते हैं और अस्पताल ले जाते हैं।		एम्बुलेन्स को बुलाते हैं और अस्पताल ले जाते हैं।
	इलाज का पूरा खर्च राजकिशोर ही भरते हैं।		इलाज का पूरा खर्च राजकिशोर ही भरते हैं।
46	भद्रावती के दो प्रमुख कार्खानों के नाम लिखिए।		भद्रावती के दो प्रमुख कार्खानों के नाम लिखिए।
	भद्रावती के प्रमुख कार्खाने हैं -		भद्रावती के प्रमुख कार्खाने हैं -
	कागज के कार्खाने। लोहे के कार्खाने।		कागज के कार्खाने। लोहे के कार्खाने।
	इस्पात के बड़े कार्खाने और आदि हैं।		इस्पात के बड़े कार्खाने और आदि हैं।
47	कर्नाटक के प्राकृतिक सुंदरी का वर्णन कीजिए।		कर्नाटक के प्राकृतिक सुंदरी का वर्णन कीजिए।
	कर्नाटक को प्रकृति माता ने सुंदरता से पाला है।		कर्नाटक को प्रकृति माता ने सुंदरता से पाला है।
	पश्चिम में विशाल अरबी समुद्र है।		पश्चिम में विशाल अरबी समुद्र है।
	दक्षिण से उत्तर तक लंबी पर्वत मालाएँ हैं।		दक्षिण से उत्तर तक लंबी पर्वत मालाएँ हैं।
	उसे हम पश्चिमी घाट कहते हैं।		उसे हम पश्चिमी घाट कहते हैं।
	कुछ भाग को सहयाद्री कहते हैं।		कुछ भाग को सहयाद्री कहते हैं।
	दक्षिण भाग को निलगिरि पर्वत मालाएँ कहते हैं।		दक्षिण भाग को निलगिरि पर्वत मालाएँ कहते हैं।
48	कर्नाटक के प्रसिद्ध भारतीय विज्ञान संस्थान कौन से हैं?		कर्नाटक के प्रसिद्ध भारतीय विज्ञान संस्थान कौन से हैं?
	<u>अथवा</u> बैंगलूरु में कौन-कौनसी बृहत संस्थाएँ हैं ?		बैंगलूरु में कौन-कौनसी बृहत संस्थाएँ हैं ?
	कर्नाटक के प्रसिद्ध भारतीय विज्ञान संस्थाने हैं -		कर्नाटक के प्रसिद्ध भारतीय विज्ञान संस्थाने हैं -
	1. एच.ए.एल. 2. एच.एम.टी. 3. आई.टी.आई. 4. बी.एच.ई.एल. 5.बी.ई.एल.		1. एच.ए.एल. 2. एच.एम.टी. 3. आई.टी.आई. 4. बी.एच.ई.एल. 5. बी.ई.एल.
	और आदि		और आदि
50	कर्नाटक में कौन-कौन से कार्खाने हैं ?		कर्नाटक में कौन-कौन से कार्खाने हैं ?
	भद्रावती में कागज, लोहे और इस्पात के कार्खाने हैं।		भद्रावती में कागज, लोहे और इस्पात के कार्खाने हैं।
	चीनी, रेशम, सिमेंट और कागज उत्पादन के अनेक कार्खाने हैं।		चीनी, रेशम, सिमेंट और कागज उत्पादन के अनेक कार्खाने हैं।
	चंदन के तेल, साबून आदि बनाने के कार्खाने हैं।		चंदन के तेल, साबून आदि बनाने के कार्खाने हैं।
51	कर्नाटक की प्रमुख नदियाँ और जल प्रपात कौनसी हैं ?		कर्नाटक की प्रमुख नदियाँ और जल प्रपात कौनसी हैं ?
	कर्नाटक के प्रमुख नदियाँ - कृष्णा, कावेरी, तुंग-भद्रा, नेत्रावती, शारावती और आदि हैं।		कर्नाटक के प्रमुख नदियाँ - कृष्णा, कावेरी, तुंग-भद्रा, नेत्रावती, शारावती और आदि हैं।
	कर्नाटक की जल प्रपात - जोग, अञ्जी, गोकाक और शिवनसमुद्र जल प्रपात हैं।		कर्नाटक की जल प्रपात - जोग, अञ्जी, गोकाक और शिवनसमुद्र जल प्रपात हैं।
52	कर्नाटक के किन साहित्यकारों को ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त है ?		कर्नाटक के किन साहित्यकारों को ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त है ?
	कर्नाटक के		कर्नाटक के
	1.कुवेम्पु. 2. द.ग.बेंड्रे. 3. शिवराम कारन्त. 4.मास्ती वेंकटेश अय्यंगार. 5.वी.कृ.गोकाक. 6.यू.आर.अनंतमूर्ति. 7.गिरीश कार्नाड 8.चंद्रशेखर कंबार जी को ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ है।		1.कुवेम्पु 2.द.ग.बेंड्रे 3.शिवराम कारन्त 4.मास्ती वेंकटेश अय्यंगार 5.वी.कृ.गोकाक 6.यू.आर.अनंतमूर्ति 7.गिरीश कार्नाड 8.चंद्रशेखर कंबार जी को ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ है।
53	कर्नाटक के वास्तुकला और शिल्पकाला के लिए उदाहरण दीजिए।		कर्नाटक के वास्तुकला और शिल्पकाला के लिए उदाहरण दीजिए।
	कर्नाटक के वास्तुकला और शिल्प काला के लिए उदाहरण हैं -		कर्नाटक के वास्तुकला और शिल्प काला के लिए उदाहरण हैं -
	बादामी, ऐहोले, पट्टदकल्लू, बेलूर, हलेबीडू, सोमनाथपुरम के मंदिर और मूर्तियाँ।		बादामी, ऐहोले, पट्टदकल्लू, बेलूर, हलेबीडू, सोमनाथपुरम के मंदिर और मूर्तियाँ।
	श्रवणबेलगोल के 57 फूट ऊँचाई की एक शिला गोमटेश विग्रह।		श्रवणबेलगोल के 57 फूट ऊँचाई की एक शिला गोमटेश विग्रह।
	विजयपुर के गोलगुंबज के विस्परिंग गैलरी।		विजयपुर के गोलगुंबज के विस्परिंग गैलरी।
	मैसूर का राज महल। सेंट फिलोमिना चर्च और आदि।		मैसूर का राज महल। सेंट फिलोमिना चर्च और आदि।

54	बांध & जलाशयों से क्या उपयोग हैं ?	७० श०३	आँकड़े & जलाशयगण्ड में फल उपयोग ?
	जलाशयों से हजारों एकड़ जमीन सींची जाती है। नदियों को बांध बांधने से ऊर्जा उत्पादन कर सकते हैं।		जलाशयगण्ड में आविराम वक्रे भूमिगं निरावर आगुत्तदें। नदियों आँकड़े कंप्यूटरिंद विद्युत् उत्त्वादिसभमदु।
56	कर्नाटक के साहित्यकारों की कन्नड भाषा तथा को संस्कृति को क्या देन है ?		कनाटके साहित्यकारिंद कंप्यूट भाष्ये मुत्तु संस्कृतिं योव कौदुगं इवे?
	कर्नाटक के साहित्यकारों ने कन्नड भाषा और संस्कृति को बहुत बड़ा देन दी है। वचनकार बसवण्णा क्रान्तिकारी समाज सुधारक थे। अक्ष महादेवी, अल्लम, सर्वज्ञ जैसे अनेक वचनकारों ने अपने वचनों द्वारा प्रेम, दया, धर्म और कर्तव्य का सीख दी है। पुरंदर दास, कनकदास और आदि कीर्तन कारों ने भक्ति और नीति का ज्ञान दी है। पंप, रन्न, पोन्न, कुमारव्यास, हरिहर, राघवांक, आदि ने कन्नड साहित्य को समृद्ध बनाए हैं।		कनाटके साहित्यकारिंद कंप्यूट भाष्ये मुत्तु संस्कृतिं बहल कौदुगं कैवित्याद्यादें। वजनकार बसवण्णा कृतिकारि समाज सुधारकरागिद्दरु। अक्षमुहादेवी, अल्लम, सर्वज्ञ रंतव वजनकारिं वजनगल मुभांतर त्रीति, करुणे मुत्तु धर्म, कंप्यूट वजनकारिं कैवित्यरु ब्यूरंदर दासरु मुत्तु कनकदासरु कैवित्यनेगल मुभांतर भृत्ये मुत्तु नीतिय ज्ञान नीदिरु। पंप, रन्न, पोन्न, कुमारव्यास, परिहर, राघवांक, मुंतादवरु कंप्यूट नाहित्यपन्न संवृद्धगंवालिंदरु।
57	भीष्म साहनी जी अन्य बालकों से क्यों जलते थे ?		साहनियं चैरे हूँदुगरैलोंदिंगे आसूयं इत्तु
	भीष्म साहनी जी अन्य बालकों से जलते थे कि- वे बचपन में निरंतर बीमार रहते थे। बचपन के खेल-कूद से वंचित रहते थे। हर घडी खाट पर ही पड़े रहते थे। पर दूसरे सब बालक स्वस्थ रहते थे और वे सब हँसते-खेलते रहते थे।		भैशु साहनियवरु चैरे बालकरैलोंदिंगे आसूयं इत्तु- अवरु बालूदल्ली निरंतरवागि अनारोग्यदिनतिद्दरु। बालूद अचौकेगण्ड मंजितरागि इरुत्तिद्दरु। प्रैति फैंचेयु मंजितर मैंले बिद्धिरुत्तिद्दरु। अदरे चैरे एलू मुदुगरु अरोग्यवागिरुत्तिद्दरु मुत्तु अवरैलूरु नगुत्तु अदृत्तु इरुत्तिद्दरु।
58	भीष्म साहनी जी को रेस्तराँ के मालिक का व्यवहार क्यों असहनीय लगा ?		भैशु साहनियवरिं हौंडेला न मालैकन नदूवलैके एके अस्वैरियवागित्तु?
	भीष्म साहनी जी को रेस्तराँ के मालिक का व्यवहार असहनीय लगा कि - एक बार लेखक और उनके अध्यापक रेस्तरा गए। लगभग आधा घंटे बैठने पर भी सर्व नहीं किया गया। रेस्तरा का मालिक चीनी था। वह सिर्फ गोरे लोगों को सर्व कर रहा था। चाय के लिए आग्रह करने पर नो टी कह कर तिरस्कार कर दिया गया। यह जाति भेद था। अपने ही देश में अपमान को सहा नहीं गया।		साहनियवरिं मालैकन नदूवलैके स्पिसलागलिलू एकेंदरे-
			इंद्रु बारि लैविकरु मुत्तु अधारुपकरु रैसैलैंडोंगे गे हौंदरु
			सुमारु अदक गंचे कौतरा वितरिसलिलू
			रैसैलैंडोंगे न मालैक चैसीयवनागिद्दरु।
			अवनु कैंवल बिलियरिंग्झै वितरिसुत्तिद्दरु।
			जपकूग अगुसिदाग नौंगे टीं इंद्रु तिरसूरुसुत्ताने।
			ज्ञाति भैंदेवागित्तु, तेन्दै दैशदल्ली अवमान स्पिसलिलू
59	अंग्रेजी अध्यापक से भीष्म साहनी जी को कैसे प्रेरणा मिली?		अ०ग्नू अधारुपकरिंद भैशु साहनियवरिं एंतक ब्रैरेण्टे सिक्कुत्तु?
	स्कूल छोड़ने के बाद अंग्रेजी शिक्षक से साक्षात्कार हुआ। वे भीष्म साहनी के दुनिय ही बदल दिए। पुराने, संकीर्ण, घुटन भरे वातावरण से बाहर निकाला। साहित्य रचना के लिए प्रेरणा दिए।		शालै बिट्टु नौंतर अ०ग्नू शिक्कुरैलोंदिंगे चैरे आयुतु। अवरु भैशु साहनियवर प्रैपंचवन्सै बदलायीदिरु। जैलैयु संैकित उैरिगट्टुसुव वा तावरजादिं हौर तंदरु साहित्य रजनेंगे ब्रैरेण्टे कैवित्यरु।
60	साहनी जी ने किस उद्देश्य से खादी पहनना शुरू किया ?		साहनियवरु भाद एके तौदलु आरंभिसिदरु?
	1942 का स्वराज्य अंदोलन शुरू हुआ था। लेखक भी इस में भाग लेना चाहते थे। इसी लिए खादी पहन कर रास्ते में घूम रहे थे। उन्हें यह उम्मीद था कि पुलिस वाले ने उन को पकड़े। इसी कारण लेखक ने खादी पहनना चाहते थे।		1942रू न्यूैंतूरु हौराट आरंभवागित्तु。 लैैविकरा स्व इदरल्ली भागपैसलु बिलिद्दरु। जैदकूगिमैं भादियन्नु तैलैच्चु रस्तैयुली सुत्तुत्तिद्दरु। अदृंगे भरपै एनैदरे ब्रैरेण्टेरु अवरसै छिदियलैन्नुपूदु ज्ञैदै कौरैचै लैैविकरु भाद तौदलु आरंभिसिदरु।
61	साहित्य के संबंध में साहनी जी की राय क्या है ?		साहित्यकै संैंचिदिंद साहनियवर बफ्टीं एनु
	साहित्य के संबंध में साहनी जी की राय है कि - साहित्य नाम की चीज अपनों से अलग नहीं होती है। लोग जैसे हैं, वैसे ही रचनाएँ रच सकते हैं।		साहित्यकै संैंचिदिंद साहनियवर बफ्टीं एनैंदरे साहित्य वैसैरिन वस्तु नम्बैंद सेरे चैरे आगिवैदलु। जनरु वैगद्यैरौंगे राजने रजिसुत्तारे।
			अवर सैंस्कृत, अनुभव, व्यक्तिपै, दृष्टि एलू व्हा सैै० रजनैय सुष्टुयागुत्तदें।

55	कर्नाटक के कुछ प्रमुख राजवंशों के नाम लिखिए।	७० श००३	केनाटकद्वे प्रमुख राजवंशेष्व ज्ञेयरु बरैयीरु.
	कर्नाटक के कुछ प्रमुख राजवंश हैं - गंग, कदंब, राष्ट्रकूट, चालुक्य, होयसल, ओडेयर और आदि।		केनाटकद्वे प्रमुख राजवंशेष्व ज्ञेयरु बरैयीरु - गंग, कदंब, राष्ट्रकूट, चालुक्य, होयसल, ओडेयर और आदि।
62	साहनी जी अपनी निःसहायकता मिटाने के लिए क्या-क्या करते थे।		साहनीयवरु तम्मु असहायकतेयन्नौ क्षेयलु एनैनु व्याकुत्तारै?
	साहनी जी अपनी निःसहायकता मिटाने के लिए - कभी बिस्तर से उठते तो बाहर दौड़ जाते थे। किसी ताँगे के पीछे चढ़ जाते थे। अनेक सड़के और बाजार सब फिरते थे। पागलों की तरह घूमते थे। सड़क और बाजार के हर चीजों पर नजारे डालते थे। शाम होने पर घर लौटते और बिस्तर पर सो जाते। घर वालों से डाँट खाते थे। घूमने-फिरने पर बंदिश लगाजाती थी।		साहनीयवरु तम्मु असहायकतेयन्नौ क्षेयलु एनैनु व्याकुत्तारै - या व्याकुत्तारै यासीयिंद एद्वरै यौरगजे छपुत्तिद्धरु. या व्याकुत्तारै कुमरै गाइयु हिंदे एरुत्तिद्धरु. अनैद रस्तैगलु मुत्तु यारुक्षेगळन्नौ सुत्तुत्तिद्धरु. युक्ष्यरैते सुत्तुत्तिद्धरु. रस्तै मुत्तु यारुक्षेयु प्रत्येयोंदर गमन वरुत्तिद्धरु. संजैयासुत्तिद्धरै युनैगे मुराले यासीगे मैले मुलगुत्तिद्धरु. युनैयुपरिंद बैगुल तिन्नुत्तिद्धरु. षड्यापद मैले निबंध बैलुत्तित्तु.
63	भीष्म साहनी का स्वाभिमान दर्शनेवाला एक घटना के बारे में लिखिए।		भैष्मै साहनीयवरु स्वाभिमानवन्नौ बिंबिसुव बिंदु फृष्टनैयै बग्नै बरैयीरु.
	भीष्म साहनी का स्वाभिमान दर्शनेवाला एक घटना है कि - एक बार लेखक और उनके अध्यापक सैर के लिए गए थे। तब वे कंटोनमेंट के रेस्तराको चाय पीने गए। रेस्तरा का मालिक चीनी था। रेस्तरा में गोरे सैनिकों ने खचा-खच भरे हुए थे। लेखकों ने करीब आधे घंटे तक चाय का इत्तजार किए। पर मालिक ने सिर्फ गोरे लोगों को ही सर्व कर रहा था। पूछने पर 'नो टी-नो टी' कह कर तिरस्कार किया। इससे पता चला कि वे जाति भेद कर रहे थे। अपने शहर में खुद को अपमान हुआ। लेखक झगड़ा करने जा रहे थे। तब अध्यापक ने हाथ पकड़ कर बाहर ले आए।		भैष्मै साहनीयवरु स्वाभिमान बिंबिसुव बिंदु फृष्टनैयै हिंगदे - बिंदु बारि लैविकरु मुत्तु अवर शिक्कू करु विवार यौविद्धरु अग दैलै निलाजद दैसैलैरेंट्को चक्षु कैदियलु यौविद्धरु दैसैलैरेंट्को न यालैक चैनियवनागिद्धनु. दैसैलैरेंट्को बिलियैर शैनिकरिंद तुंबिहैवित्तु. लैविकरु चक्षु अद्धर गंबै वरीगे कादरु. अदरै मालिकनु कैवल बिलियैर यात्तु वितंसुत्तिद्धनु. कैलिदाग नौं टीं एंदु तिरसुत्तिद्धनु. ज्ञदरिंद तिलितु अवरु जाति भैद यादुत्तिद्धरु. तम्मुदे नगरदली लैविकरीगे अवमान आयितु. लैविकरु जग्ज मादलु यौरत्तिद्धरु. अग अद्धाप्तकरु कै हिक्कु यौरत्तिद्धरु.
64	भीष्म साहनी जी के साहित्यक वातावरण का परिचय दीजिए।		साहनीयवरु साहित्यै परिसरद परिचयै कौडि.
	भीष्म साहनी के घर में साहित्यक वातावरण पहले से ही था। पिता शोक-सादी के प्रेमी थे। माता से गीत, कवित और कहाँनियाँ सुने थे। बड़े भाई हिन्दी और अंग्रेजी में लेख लिखते थे। बुआ की बेटी सत्यवति मल्लिका का घर साहित्य केंद्र के समान था। वहाँ पर वे साहित्य अध्ययन करते थे।		साहनीयवरु मुनैयली साहित्यै वातावरै वौदलीनिंदलै ज्ञत्तु. तंदं लैक्का सादियवरु अनुयायी आगिद्धरु. तायियुंद गीते, कविते मुत्तु कत्तेगळन्नौ कैलिद्धरु. अज्ञु बिंदु मुत्तु ज्ञानिक्कू नली लैविन बरैयुत्तिद्धरु. अत्तेयु मुगलु शक्यवति मुलीकरु मनै साहित्यै कैंदूदंपत्तित्तु. अली अवरु साहित्यै अद्धुयैन यादुत्तिद्धरु.
65	लेखक को भेजे गए निमंत्रण पत्र में क्या लिखा गया था ?		लैविकरिंगै कल्हिक्षिद पत्तुदली एनु बरैदित्तु.
	एक शहर में कुछ लोग इमानदारों के सम्मेलन कर रहे थे। वे लेखक को निमंत्रण पत्र भेजे थे। उस में लिखा गया था कि - लेखक देश के प्रसिद्ध ईमानदार हैं। वे ही सम्मेलन का उद्घाटन करें। उन को आने जाने का पहले दर्जे का किराया देते हैं। रहने के लिए और भोजन के लिए उत्तम व्यवस्था करेंगे। लेखक से उदीयमान इमानदारों को प्रेरणा मिलेगी।		बिंदु नगरदली कैलवरु प्रामाणीकरु सम्वादेत यादुत्तिद्धरु अवरु लैविकरिंगै अपूर्णत्तु पत्तु कल्हिक्षिदरु. अदरली बित्तु एनैंदरै - अवरु दैशद प्रूप्ति यामाणीकराग्नुरै. अवरै कम्प्युलनद लादाढ्हुक्सै मात्तेजै. अवरै बिंदु मौद्रिक दैशदलै दजैयै दजैयै वै एंदु वरु लालदमैलैलु मुत्तु भौजैनद लात्तुमै व्यवस्थै यादुवरु लैविकरिंद लादमैलैन्नौ यामाणीकरिंगै फ्रैरक्सै शिगुत्तदै.
66	फूल मालाएँ मिलने पर लेखक क्या सोचने लगे ?		हौविन हारि शिक्कू लैविकरु एनु यौजिसिदरु?
	लेखक को दस बड़े फूल मालाओं से आमंत्रण किया गया। फूल मालाएँ मिलने पर लेखक ने सोचने लगे कि - आस-पास कोई माली होता तो उसे मालाएँ बेच देता। फूल मालाएँ बेचने से चार पैसे मिलते हैं।		लैविकरिंगै तम्तु दोद्धु यौविन हारिलै यामाणीकरु. हौविन हारि शिक्कू लैविकरु यौजैक्षिदरु, एनैंदरै सुत्तु मुत्तु यारुक्षेयु वौगारनिद्धरै अपनैगे यारुत्तिद्धरु. हौविन हारि मारद्वरै नाल्लु फ्रैसै वै एंदु शिगुत्तदै.

73	सम्मेलन में लेखक के क्या-क्या अनुभव रहे ? संक्षेप में लिखिए।	सम्मेलन नदली लैविकरिंगे वनेन अनुभव आये ? संक्षेप बरेया
	सम्मेलन में लेखक को अनुभव हुआ कि -	सम्मेलन नदली लैविकरिंगे अनुभव वाया था, वनेन दरे -
	सम्मेलन ईमानदारों के था पर सब बे-ईमान का व्यवहार किए।	सम्मेलन प्रामानिकरदानी तु उदरे वल्ल रा अप्रामानी कवागी व्यवहारी दरु।
	ईमानदारों के साथ होशियार से काम करना था।	प्रामानी कर जौते जान्ही यिंद (यहारागी) कैलस मात्र बैकित्तु।
	सम्मेलन में लेखक के बहुत चीजें चोरी हो गई थीं।	सम्मेलन नदली लैविकर बज़ वस्तु गल कलवाइद्ध पृ।
	लेखक को सम्मेलन का अनुभव बहुत विषादनीय था।	लैविकरिंगे सम्मेलन अनुभव तुंब बैसरमयवागी तु।
	लोग बोलते कुछ और करते कुछ।	जनरु हेलुतारे बंदु मादुतारे जनेवांदु।
74	प्रकृति पर सर्वत्र है विजयी पुरुष आसीन' - इस पंक्ति का आशय समझाइए।	प्रकृतियं मैले वल्ल कडेगललू विजयं पदेदद्वन्मनुष्ट् - उदर शर्यवैनु?
	आज का मानव प्रकृति के हर वस्तु पर विजय पाया है।	ज०दिन मनुष्ट् प्रकृतियं प्रतियोंदु वस्तुविन मैले विजय पदेदद्वन्मनु?
	प्रकृति के नदी, सागर, पर्वत, हवा सब पर विजई है।	प्रकृतियं नदि, नाल, सागर वल्ल वैदर मैला जयिंदान्मनु?
	प्रकृति को विकृत कर दिया है।	प्रतियोंदु विरोहगोलिद्वन्मनु?
	प्रकृति के सहज रूप असहज कर दिया है।	प्रतियोंदु विरोहगोलिद्वन्मनु?
	अपने इच्छा के अनुसार प्रकृति को बदल देता है।	तन्त्र ज्ञान्योंते प्रकृतियोंदु बदलिंदान्मनु?
75	दिनकर जी के अनुसार मानव का सही परिचय क्या है ?	दिनकर वृक्षार मानवन विज परिचयवैनु?
	दिनकर जी के अनुसार मानव का सही परिचय है -	कवियं प्रक्षार मानवन सरियाद प्रतियं वनेन दरे -
	वह एक दूसरे से रिश्ता जोडे।	मानव उभूरिगोल्लरु संबंध जौदिसिकौल्लबैकु।
	एक दूसरों के साथ स्नेह और प्रेम से रहे।	उभूरिगोल्लरु रौद्रिंदिगोल्लबैकु।
	प्रेम से आपसी दूर को कम करे।	प्रैतियोंदु परस्त अंतरवन्मनु किमें(पत्रि) मादिकौल्लबैकु।
	परस्पर सहयोग से रहे।	प्रत्यक्षर सप्तयोगदिंद जरबैकु।
	मानवीयता का भाव जगाएँ।	मानवीयतेयं भावनेयन्मनु जागृतगोलिसबैकु।
	मानव मानव के बीच में प्रेम बढ़ें।	मानव मानवरल्ली त्रैते वैक्षण्गली।
76	इस कविता का दूसरा कौन-सा शीर्षक हो सकता है। क्यों ?	कः कवितेर्गं बैरे याव शिष्मदके निद बहुद्यु?
	इस कविता को दूसरा शीर्षक "आधुनिक मानव" या "असहज मनुष्य" या "प्रकृति और मानव रख सकते हैं। क्यों कि	कः कवितेर्गं बैरे वैसरु "आधुनिक मानव" / "असहज मनुष्य" अथवा "प्रकृति मनुष्य मानव" एंदु वैसरिसंभवमु। वकेंद्रे
	आधुनिक मानव : -	आधुनिक मानव :-
	यह मानव प्रकृति की समस्त मूलता को मिटा दिया है।	कः मनुष्ट् प्रकृतियं मूलवन्मनु नाश मादिद्वन्मनु?
	आधुनिकता के गूँज में भावनाओं को मिटा दिया है।	अप्सिकतेयं गुणिल्ली भावनेगल्लन्मनु कल्मदेहिंदान्मनु?
	वैज्ञानिक भावनाओं के आधार पर नयापन अपनया है।	वैज्ञानिक भावनेयं अधारद मैले वैसतन पदेदद्वन्मनु?
	असहज मनुष्य : -	असहज मानव :-
	मानव सहजता को मिटाकर अपना ही चाल चलाता है।	मानवन सहजतेयन्मनु अलिं तन्दें बुद्धियन्मनु उदिसुत्तान्मनु?
	प्रकृति विरोधी काम कर रहा है।	प्रकृतियं विरोधवाद कैलस मादुतान्मनु?
	मानव सहजता मानवीयता है।	मनुष्ट् सहज गुण मानवीयते आदी।
	मानवीयता को भूल कर यंत्रों के साथ जी रहा है।	मनुष्ट् वैपन्मनु मरेतु यंत्रुगल जौते बदुक्तिद्वन्मनु?
	प्रकृति और मानव : -	प्रकृति मनुष्ट् मनुष्ट् :-
	प्रकृति के हर क्षेत्र में अपना हक जमाया है।	प्रकृतियं प्रतियोंदु क्षेत्रदल्ली तन्त्र वैक्षण्गली साधिंदान्मनु?
	वह आकाश से पाताल तक पहुँच रहा है।	अपनु आकाशदिंद घाताल वरेगो वरिंदान्मनु?
	प्रकृति पर विजय प्राप्त करना ही मानव का लक्ष्य बन गया है।	प्रकृतियं मैले जयं पदेयेवदे मानवन गुरियाबिट्टदे.
	मानवीयता को भूल कर यंत्रों के साथ जी रहा है।	मनुष्ट् वैपन्मनु मरेतु यंत्रुगल जौते बदुक्तिद्वन्मनु?
77	तिम्मका दंपति किस प्रकार के धर्म-कार्य में लग गए ?	तिम्मकै दंपतिगलू याव रैतियं धम्म शांत्यदली तैलदिरु?
	तिम्मका दंपति धर्म-कार्य में लग गए कि -	तिम्मकै दंपतिगलू धम्म शांत्यदली तैलदिरु वनेन दरे -
	उनके गाँव के पास रंगस्वामी का मंदिर था।	अपर शांत तत्त्वर रंगस्वामी मूंदिर ज्ञातु.
	हर साल वहाँ जानवरों का मेला लगता था।	प्रैति वैपन अली जानवरगल जाते नदेयुत्तु.
	मेले को अनेक जानवर आते थे।	जातेर्ग अनेक जानवरगल बरुत्तवे.
	उन जानवरों को पानी का इंतजाम करते थे।	अ जानवरगल नीरन वृष्टस्त्रै मादुत्तिद्वरु.

78	तिम्मका ने बरगद के डालों को कैसे पाला-पोसा ?	७० शांति	तिम्मकृष्ण अराध्य गिरगळन्नू हौंगे पूर्वाषिसिद्धु?
	तिम्मका दंपति ने-		तिम्मकृष्ण दंपतिगळु-
	रास्ते के दोनों ओर बरगद के डाल लगाए।		रस्तैयू एरड़ा बिंदील्लू अराध्य गिरगळन्नू हृष्टिदरु.(नेट्टूरु).
	भेड़-बकरियों से बचाने की व्यवस्था की।		मैंके कुंगालंद रक्षी सुव वृष्टसै घाइदरु.
	पानी सिंचाने की व्यवस्था की।		निरुद्धीं सुव वृष्टसै घाइदरु.
	दस साल तक अपने बच्चों की तरह पालन की।		जत्पु वशद वरैंगे तम्मू मुक्तूलंते घालने घाइदरु.
79	तिम्मका के जीवन में कैसी मुसीबत आ गई ?	तिम्मकृष्ण जैवनदल्लू एंतक कृष्ण बंदिकु?	
	तिम्मका के जीवन में मुसीबत आ गई कि -		तिम्मकृष्ण जैवनदल्लू आपत्तु (क्षेप्तु) बंदितु घनेंदरै-
	पति का तबीयत खराब हुआ। बीमार से पति की मृत्यु हुई।		गंदरन आरैगृ कैट्टुरु. प्रतियू मृत्यु आयितु.
	तिम्मका अकेली पड़ गई।		तिम्मकृष्ण उभूलंठियादरु.
	फिर भी हिम्मत न हारी।		आदरा शव एंगुंदलिल्लू(घैयूरागैंदलिल्लू)
	अपने कार्य में लगी रही।		उन्नू कैलसदल्लू तल्लैनरागै इद्दरु.
80	तिम्मका ने क्या संकल्प किया ?	तिम्मकृष्ण योव संकल्प (निधार) घाइदरु?	
	तिम्मका परिसर संरक्षण के साथ-साथ,		तिम्मकृष्ण परिसर रक्षी सुवदर जैलै-जैलैगै,
	गरीबों के लिए उचित अस्पताल की स्थापना करने का संकल्प की।		बदवरैं उचित आस्ट्रैयू निमाराद संकल्प घाइदरु.
	पुरस्कार से प्राप्त धन राशी को गरीबों की सेवा में लगाई।		प्रैश्चिंगैंद बंद घालन्नू बदवरै सैवेयल्लू विनियोगिकिदरु
81	बच्चे को गोद लेने के कारण तिम्मका दंपति को दुःख भोगना पड़ा। क्यों ?	मगुवन्नू मुदिलिं (दक्षु) प्रदेद कारण तिम्मकृष्ण दंपतिगळैं दुःख अनुभविसेहायितु. एकै?	
	तिम्मका दंपति निःसंतान थे।		तिम्मकृष्ण दंपतिगळु बंदजै आग्दरु. (मुक्तूरलिल्लू)
	वे दोनों बच्चों के लिए तरस रहे थे।		अवरिभूरु मुक्तूरागी चक्कपदिसुत्तिद्दरु.
	वे एक बच्चे को दत्तक में गोद लिए।		अवरु बंदमु मगुवन्नू दत्तु प्रदेदमु मुदिलु तुंबिकैोंदरु.
	लोगों ने सगे माँ-बाप को निंदा करने लगे।		जनरु निजावद तंदें-तायिगैंगै निंदनै मादलारंभीकिदरु
	इसी कारण सगे माँ-बाप बच्चे को वापस ले लिए।		एदैं कारणकृष्टूत्त तायिं तंदें मगुवन्नू वापसु प्रदेदरु.
	तो बच्चे को खो कर तिम्मका दंपति बहुत दुःखी हुए।		घागागि मगुवन्नू कैदेदकैोंद मुंबा दुवितरादरु.
82	पर्यावरण संरक्षण में तिम्मका का क्या योगदान है ?	परिसर संरक्षणीयल्लू तिम्मकृष्ण कौदूरै एनु?	
	तिम्मका दंपति ने पेड लगाने का बात सोची।		तिम्मकृष्ण दंपतिगळु मुरगळन्नू नैदूप यैंगैकै घाइदरु.
	हुलिकल से कुदूर के बीच रास्ते के दोनों ओर बरगद के डाल लगाए।		मुलिकलू इंद घुदूरो वरैंगे रस्तैयू एरड़ा बद अराध्य गिरगळन्नू नेट्टूरु.
	भेड़-बकरियों से बचाने की व्यवस्था की।		कुरि मैंके गजिंद उजिसुव वृष्टसै घाइदरु.
	पानी सिंचाने की व्यवस्था की।		निरुद्धीं सुव वृष्टसै घाइदरु.
	दस साल तक अपने बच्चों की तरह पालन की।		जत्पु वशद वरैंगे तम्मू मुक्तूलंते घालने घाइदरु.
	इससे पेड छाया देने के साथ पक्षियों का आश्रय बनें।		एदरिंद घुरै नैरुलै कौदूपुदर जैलै प्रैक्टिगैंगै आश्रयवायितु
	तिम्मका अब तक हजारों पेडों का पालन की है।		तिम्मकृष्ण कूपरैंगै साविरारु मुरगळ घालने घाइदारै.
83	तिम्मका को किन-किन पुरस्कारों से अलंकृत किया गया है?	तिम्मकृष्ण योव द्वैश्चिंगैंद अलंकैरसलायै?	
	तिम्मका जी अपनी अनुपम सेवा के लिए प्राप्त पुरस्कार हैं -		तिम्मकृष्णरु तम्मू अनुपवै सैवेंगै प्रदेद प्रैश्चिंगैंगै इवगळागै-
	1. नाडोज पुरस्कार 2. राष्ट्रीय नागरिक पुरस्कार		1. नादेंगैज प्रैश्चिंगैं 2. राष्ट्रीयू नागरैक प्रैश्चिंगैं
	3. इदिरा प्रियदर्शिनि वक्ष मित्र 4. वीर चक्र		3. इंदिरा श्रीयैरुपै वैक्षै मीतै 4. वीर चक्र
	5. कर्नाटक कल्पवल्ली 6. वनरानी 7. वृक्षमाता		5. कारांडक कल्पवल्लू 6. वन राणै 7. वृक्षू मातै
	8. वनस्पति रत्न 9. ग्रीन चाम्पियन पुरस्कार		8. वनस्पति रत्नू 9. ग्रीनै चांफियनू प्रैश्चिंगैं
	10. गाड़ फ्री फिलिप्स धैर्य पुरस्कार 11. विशालाक्षि पुरस्कार		10. ग्रांड श्रीै फिलिप्सू शैयूरु प्रैश्चिंगैं 11. विशालाक्षि प्रैश्चिंगैं
	12. डा. कारंत पुरस्कार और अनेक सम्मान।		12. डा। कारंत प्रैश्चिंगैं मुत्तु अनैक प्रैश्चिंगैंगै.
84	"तिम्मका एक आदर्श व्यक्तित्व है।" कैसे ?	"तिम्मकृष्ण उभू आदर्श वृक्षियाग्दारै". हौंगे?	
	तिम्मका एक आदर्शवान व्यक्ति हैं कि-		तिम्मकृष्ण उभू आदर्श वृक्षै आग्दारै, वैंगैंदरै-
	वे गरीब और अनपढ हैं, पर		अवरु बदवरै मुत्तु अपिद्वापरराग्दारै, आदरै
	समाज सेवा कर रही हैं।		समाज सैवै घाइदुत्तिद्वारै.
	रास्ते के दोनों ओर बरगद के डाल लगाए।		रस्तैयू एरड़ा बिंदील्लू अराध्य गिरगळन्नू हृष्टिदरु.(नेट्टूरु).
	उन्हें अपने बच्चों की तरह पालन पोषण की।		अव्यगळन्नू तम्मू मुक्तूलंते पूर्वाषिसिद्धु.
	मेले में अनेवाले जानवरों को पानी का इंतजाम की।		जात्पुरु अनैक जानवरगळै निरुन वृष्टसै घाइदरु.
	गरीबों को उचित चितित्सा के लिए अस्पताल की स्थापना की।		बदवरैं उचित जैक्टैरैंगै आस्ट्रैयू निमाराद घाइदरु.
	पर्यावरण की रक्षा के साथ समाज सेवा का कार्य कर रहे हैं।		प्रैश्चर रक्षीैयू जैलैगै समाज सैवै घाइदुत्तिद्वारै.
	पुरस्कार से प्राप्त धन राशी को गरीबों की सेवा में लगाई।		प्रैश्चिंगैंद बंद घालन्नू बदवरै सैवेयल्लू विनियोगिकिदरु

85	मुखिया को मुख के समान होना चाहिए। कैसे ?	१० शांति	नामकनु बायीयंते इरबैकाग्दे. एके?
	तुलसी दास जी कहते हैं कि –		तुलसीदासरु हैळुत्तुरे पनैंदरै-
	मुखिया मुख के समान होना चाहिए।		नामकनु बायीय समावागि आगबैकु. (इरबैकु)
	खाने का काम अकेला मुख करता है।		तिन्हूप कैलसवन्नु बायीयु छिंटियागि(बंदे) मामुत्तुदे
	पर शरीर के सब अंगों का पालन-पोशण होता है।		आदरै ठरैरद एल्लु अंगगळ प्रालनै फैँफैँयागुत्तुदे.
	इसी प्रकार मुखिया को भी विवेकवान होना चाहिए कि		जदै कारणत्तु नामकनु विवैक उल्लृपनागिर बैकु.
	अपने काम से समाज में सभी का भला हो।		तन्हू कैलसदिंद समाजदल्लु एल्लिंगु छैयागबैकु.
86	मनुष्य को हंस की तरह क्या करना चाहिए ?	मनुष्य कैसे पक्षीयंते एनु व्याद बैकाग्दे?	
	तुलसी दास जी कहते हैं कि –		तुलसी दासरु हैळुत्तुरे, एनैंदरै-
	मनुष्य को हंस की तरह रहना चाहिए।		मानव यौंस पक्षीयंते इरबैकाग्दे.
	हंस पक्षि दूध में निहित पानी को छोड़ कर		हौंसव्य यालिनल्लु इरव निरन्नु बिट्टु
	केवल दूध को पीता है।		कैवल यालन्नु मात्रु कृदियुत्तुदे.
	मानव जीवन गुण-दोष से युक्त है।		मानव जैवन गुण-दोषगांद कूदिदे.
	मनुष्य केवल गुण को ही स्वीकार करना चाहिए।		मानव कैवल गुणन्नु मात्रु शिरिसचिकु.
87	मनुष्य के जीवन में प्रकाश कब फैलता है ?	मानव जैवनदल्लु बैळकु यावाग करदुत्तुदे?	
	तुलसी दास जी रामनाम की महत्व बताते हुए कहते हैं कि		तुलसीदासरु राम नामद मुपत्तुद वैळुत्तु तिळसुत्तुरे-
	जिस प्रकार देहरी पर दिया रखने से घर के अंदर और बाहर दोनों ओर प्रकाश होता है		याव ठैति फौखुल पैळै दीप इदूपुदिंद मनैय उजै मत्तु फौरगे एरजा कैदै बैळकु आगुत्तुदैयो।
	उसी प्रकार राम नाम जपने से मानव के अंतरिक और बाह्य जीवन में प्रकाश फैलता है।		उसी प्रकार राम नाम(हैसरु) जिल्लुपुदिंद मानवन अंठरंक मत्तु बाह्य जैवनदल्लु बैळकु वरदुत्तुदे.
88	"तुलसी साथी विपत्ति _____ राम भरोसो एक।" (भावार्थ लिखिए)	"तुलसी जैतेगार कैव्यद _____रामन भरवसैयोंदै।" (भावार्थ बरेयो)	
	यह दोहा तुलसी दास जी रचित है।		कै द्वृपदि तुलसी दासरु रचिकृपुदाग्दे.
	तुलसी दास जी कहते हैं कि –		तुलसी दासरु हैळुत्तुरे, एनैंदरै-
	विद्या, विनय और विवेक जीवन के साथी हैं।		विद्यै विनयै मूत्तु विवेकगलु जैवनद जैतेगारराग्दारे.
	जब विपत्ति आती है तो इन की सहायता से बच सकते हैं।		यावाग अपत्तु बरदुत्तुदैयो आग इव्वगळ सवायदिंद उल्लूदैयोजुभुदु.
	जो राम पर भरोसा रखता है वह साहसी, स्त्यवान और सुकृतवान होता है।		रामन वैळै नंबिकै इरवरु सावसि, सत्तुवंत , मूत्तु उल्लूय कैलस मामुपवनु आगुत्तुनै.
89	कृष्ण बलराम के साथ खेलने क्यों नहीं जाना चाहता है ?	कृष्ण बलरामनैोंदिगै आजलैकै हैळुगुवुदिल्ल?	
	बलराम के साथ कृष्ण खेलने नहीं जाना चाहता है कि		बलरामनैोंदिगै कृष्ण आजलै फौंगुवुदिल्ल, एकैंदरै
	बलराम उसे चिढ़ाता है कि-		बलराम अवसन्न भैळुसुत्तुनै, एनैंदु अंदरै
	कृष्ण का रंग काला है।		कृष्णै बूङै कैरियदू इदै.
	बाकी सब गोरे हैं।		उल्लूदैवरेल्लरु बिल्लयरिद्दारे.
	कृष्ण यशोदा के बेटा नहीं है।		कृष्णै यशोदैयै मूग अल्ल.
	कृष्ण को मोल लिया गया है।		कृष्णैन्नु कौलंदकैळुलाग्दे.
90	बलराम कृष्ण के माता-पिता के बारे में क्या कहता है ?	बलरामनु कृष्णन तायी-तंदेयू बग्गै एनु हैळुत्तुनै	
	बलराम कृष्ण के माता-पिता के बारे में कहता है कि		बलरामनु कृष्णन तायी-तंदेयू बग्गै हैळुत्तुनै एनैंदरै
	यशोदा और नंद कृष्ण के माता पिता नहीं हैं।		यशोदै मूत्तु नंद कृष्णन तायी तंदेयूरल्ल.
	वे गोरे हैं और कृष्ण काला है।		अवरु बैळुगिद्दैरु मूत्तु कृष्णै करुगै इद्दैनै.
	वे कृष्ण को मोल लिया हैं।		अवरु कृष्णैन्नु विरीदिद्दैरु.
91	कृष्ण अपने माता यशोदा के प्रति क्यों नाराज है ?	कृष्णै तन्हू तायी यशोदैयै मैळैकै बैँसरनाग्दानै?	
	कृष्ण अपने माता यशोदा के प्रति नाराज है कि		कृष्णै तन्हू तायी यशोदैयै मैळै बैँसर आग्दानै एकैंदरै
	माँ यशोदा बलराम से प्यार करती है।		तायी यशोदै बलरामनै त्रैतिसुत्तुलै.
	कृष्ण को गलती करने पर मारती है।		कृष्णै तप्पु वादिदागै यैळैयूत्तुलै.
	पर , बलराम को कुछ नहीं कहती है।		आदरै, बलरामनै एनै हैळुपुदिल्ल.
92	यशोदा कृष्ण के क्रोध को कैसे शांत करती है ?	यशोदै कृष्णै तन्हू तैळैपवन्नु कैळै तांत्गैळैसुत्तुलै	
	यशोदा कृष्ण के क्रोध को शांत करने के लिए कहती है कि		यशोदै तन्हू तैळैपवन्नु कैळै तांत्गैळैसुत्तुलै
	बलराम जन्म से ही चुगलखोर है।		बलरामनु यैळैनिंदलै चांत्गैळैसलै हैळुत्तुलै.
	गोधन की कसम खा कर कहती है कि		दनगळ आकै मादि हैळुत्तुलै, एनैंदरै
	वे ही कृष्ण का माता हैं और		अवरै कृष्णै तायी आग्दारै मूत्तु
	कृष्ण ही उनके पुत्र हैं।		कृष्णैनै अवरै मूग आग्दानै.

